<u>प्रेस प्रकाशन</u>

सेंटर फॉर ज्योग्राफिकल स्टडीज द्वारा चौथा वेब लेक्चर सीरीज संपन्न

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय में स्तिथ सेंटर फॉर ज्योग्राफिकल स्टडीज, पटना में अपने व्याख्यान श्रंखला कार्यक्रम का चौथा आयोजन किया गया | सेंटर फॉर ज्योग्राफिकल स्टडीज, पटना में निदेशक, प्रोफेसर पूर्णिमा शेखर सिंह ने इस अवसर पर गूगल मीट के माध्यम से मुख्य वक्ता के रूप में नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (NEHU), शिल्लौंग के प्रोफेसर देबेन्द्र कुमार नायक का स्वागत किया |

व्याख्यान का मुख्य शीर्षक था – "द यंग नॉर्थ एंड द ओल्ड साउथ : इम्प्लिकेसंस ऑफ़ द ग्रेट डेमोग्राफिक डिवाइड इन इंडिया"| इन्होंने देश के कुल प्रजनन दर की चर्चा करते हुए बताया कि वर्तमान में बिहार में सर्वाधिक 3.3% प्रजनन दर है साथ ही इन्होंने स्वतंत्रता के समय से वर्तमान समय तक के जनांकिकीय व्यव्हार में परिवर्तन की भी चर्चा की | इन्होंने बताया कि वर्तमान में प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर के करीब पहुँच गया है साथ ही प्रजनन दर में यह गिरावट सभी धार्मिक वर्गों और प्रादेशिक क्षेत्रों में देखा जा रहा है | इसको इन्होंने मौन जनांकिकीय क्रांति की संज्ञा दी | बिहार के सन्दर्भ में इन्होंने बताया कि अधिक जनांकिकीय दर अधिक विष्फोटक जनसंख्या को बताता है जो कहीं न कहीं नगरीय आव्रजन को दर्शाता है| वर्तमान में इस प्रकार का आव्रजन से उत्तरी भारत से दक्षिणी भारत में शिफ्ट होने की प्रवृति देखी जा रही है | वर्तमान प्रति स्थापन दर को देखते हुए इन्होंने बताया कि अब हमें गुणवत्ता पूर्ण जनसंख्या को बनाने हेतु सोचना होगा नाकि जनसंख्या नियंत्रण के सन्दर्भ में सोचना होगा |

सेंटर फॉर ज्योग्राफिकल स्टडीज की निदेशक द्वारा भी इस सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार जैसे राज्य में जनांकिकीय लाभांश के अंतर्गत अधिकांश जनसंख्या युवा/कार्यिक जनसंख्या है | वर्तमान परिप्रेक्ष में इस जनसंख्या को कुशल बनाने की आवश्यकता है जिससे उनकी

आय में वृद्धि के साथ साथ राज्य के आय में भी वृद्धि होगी तथा मणि आर्डर इकॉनमी भी विकसित होगी |